

20. भारत की जनता

डॉ० प्रभाकर माचवे

ओ भारत की जनता।

विविध रंग की, विविध रूप की, विविध जाति की जनता।

यहां हिमालय की गोदी में

याक, कारवाँ लिए

कई पहाड़ी बालक धीमे

तेन सिंग बन रहे,

यहाँ परस्पर बंधु-भाव है, उदारता सज्जनता

ओ भारत की जनता!

इसी देश में साम गान से ध्रुपद धमार चला था,

इसी देश में शेरपा छूते उच्च स्वर्ग का माथा,

इसी देश में गाई तुलसी औक रवीन्द्र ने गाथा,

व्यापी है अनन्त आशय से धरती की कण-कणता,

ओ भारत की जनता।

कन्याकुमारी खड़ी है लेकर

अक्षत-कुंकम थाल,

हिन्द महासागर पखारता

चरण-कमल चिरकाल,

यहाँ त्याग ने पूजा पाई, अर्चित है अशरणता।

ओ भारत की जनता।

* अभ्यास *

1. भारतीय जनता की कवि ने किस विशेषता की प्रशंसा की है ?
2. 'शेरपा छूते उच्च स्वर्ग' का क्या अभिप्रायः है ?
3. कवि ने इस कविता में भारतवर्ष के किन-किन गुणों की प्रशंसा की है ?

